परिशिष्ट 16 *देना*
दशमांश एवं पुराने नियम की व्यवस्था

दशमांश है अपनी कमाई का एक दसवां हिस्सा देना। यद्यपि यीशु मसीह के सबब से अपनी कमाई का दसवां हिस्सा देना काफी मसीहों के लिए वैध है, बाईबल यह नहीं सिखाती की मसीहों को दशमांश देना चाहिए। बाईबल में दशमांश का सम्बंध समारोहपूर्ण व्यवस्था से है। जैसे कि मन्दिर, याजकपद, जानवरों के बलिदान और शारीरिक खतना। नए नियम में समारोहपूर्ण व्यवस्था पूरी कर दी गई है एवं एक तरफ रख दी गई है।

क. प्राचीन काल में दशमांश

1. दशमांश इस्राएल तक ही सीमित नहीं था।

देश की उपज का दशमांश, व्यापारिक जीवन के मुनाफे और युद्ध–लूट और इस हिस्से को विशेष रूप से किसी ईश्वर को समर्पित करना, शामी साथ ही साथ इंडो–जर्मनिक राष्ट्रों की प्राचीन संस्कृति थी।

2. बाईबल के इतिहास में दशमांश के कई अर्थ थे।

(1) किसी महत्वपूर्ण के प्रति आदर के चिन्ह के रूप में।
अब्राहम (2167–1992 ई.पू) नें मलिकिसिदक, सालेम के राजा और परमप्रधान परमेश्वर याजक, को युद्ध–लूट का दसवां दिया। यह अपने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण किसी अन्य के प्रति आदर का चिन्ह था (उत्पत्ति 14:18–20)।

(2) परमेश्वर के प्रति प्रण के छुटकारे के लिए दशमांश ।
याकूब (2007–1860 ई.पू.) ने बेतेल में परमेश्वर के साथ प्रण किया। ''यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं: तो ..... जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा'' (उत्पत्ति 28:20–22)।

(3) एक सांसारिक मालिक को किराए के भुगतान के रूप में दशमांश ।
यूसुफ (करीब 1877 ई.पू.) मिस्र के लोगों के लिए एक आपातकालीन उपाय स्थापित किया, देश की उपज के दो दसवें अंश फिरौन को देने के लिए (उत्पत्ति 47:24,26)। यह सांसारिक दशमांश था और पवित्र दसवांश से इसमें अंतर किया जाना चाहिए।

(4) पुराने करार की आराधना सभा के समर्थन के रूप में दशमांश ।
निर्गमन के बाद परमेश्वर ने मूसा को दी गई व्यवस्था में पवित्र दशमांश की आज्ञा दी (1447–1407 ई.पू.), अर्थात पुराने करार की अवधि के दौरान उसके लोगों की आराधना सभा के एक भाग के रूप में दशमांश (लैव्यव्यवस्था 27:30–34)।

(5) राजा (सरकार) को कर के भुगतान के रूप में दशमांश ।
शमूएल भविष्यवक्ता (1060–1032 ई.पू.) ने चेतावनी दी थी कि इस्राएल के राजा अपने सबसे अच्छे पुरुषों और महिलाओं को उनके सांसारिक महत्वाकांक्षा की सेवा के लिए लेंगे, अपने सर्वश्रेष्ठ खेत अपने परिचारिकाओं को देने के लिए लेंगे, और एक नागरिक कर के रूप में उनकी फसल,अंगूर की पैदावार और भेड़–बकरियों का दसवां अपने सांसारिक राज्यों को चलाने के लिए लेंगे (1 शमूएल 8:11–20)।

ध्यान दें: पुराने नियम के समारोहपूर्ण व्यवस्था के अनुसार दशमांश को छोड़कर यह सभी उदाहरण ऐतिहासिक हैं।

ख. पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार दशमांश

1. दशमांश इस्राएल के समारोहपूर्ण या अनुष्ठान व्यवस्था का हिस्सा था (१४४७ –१४०७ ई.पू.)।

समारोहपूर्ण व्यवस्था की विषय–सूची।

- समारोहपूर्ण व्यवस्था ने निम्नलिखित के संबंध में कानून निर्धारित किए:
- पवित्र लोग (याजक, लेवी)
- पवित्र स्थान (सभा का तम्बू या मिलाप का तम्बू, मन्दिर)

- पवित्र समय (सब्त, धार्मिक पर्व और एक उपवास का दिन)
- पवित्र कार्य (बलिदान, भेंट,पहला फल, पहला बच्चा और दसवांश लानाय खतना, प्रक्षालन और केवल शुद्ध भोजन खाना)

समारोहपूर्ण व्यवस्था का उद्देश्य।

समारोहपूर्ण व्यवस्था पवित्र भूमि (इस्राएल) में परमेश्वर की आराधना से निपटी। इसने पुराने नियम की अवधि के लोगों को सिखाया कैसे परमेश्वर चाहता था वे उसके पास आयें और उसकी आराधना करें। परमेश्वर ने इस्राएल को मूर्ति पूजा नष्ट करने और अन्य जातियों की तरह उसकी आराधना न करने की आज्ञा दी (व्यवस्थाविवरण 18:9–13)! परमेश्वर ने स्थान को चुना, जहाँ उसने सभी इस्राएलियों को वेदी के लिए नियुक्त भेटों को और सभी अन्य बलिदानों को जो वेदी के लिए नियुक्त नहीं थे लाने को कहाः नामतः, दशमांश, विशेष उपहार (संभवतः पहले फल), प्रण लिए उपहार, स्वेच्छाबलि भेंट (व्यवस्था या प्रण द्वारा आवश्यक उपहार नहीं) और पहलौठे (व्यवस्थाविवरण 12:1–6)। जानवरों के पहलौठे भोजन के रूप में याजकों के लिए परोसे जाते थे और यह विशेष भेंटों के रूप में तैयार किए जाते थे (गिनती 18:15–20)। या पहलौठे जानवर येरुशलेम में बलिदान के पर्व के दौरान भोजन के रूप में परोसे जाते थे (व्यवस्थाविवरण 12:7,17)। शायद, याजकों ने पहलौठे जानवरों का बलिदान पर्व तैयार किया और साथ में जानवरों को देने वालों को आमंत्रित किया था।

2. <u>दशमांश की सामग्री पूरी तरह स्पष्ट रूप से तय नहीं थी</u>।

पुराने नियम में कुछ अंश के अनुसार, दशमांश में ''वो सब जो आपकी खेतें हर साल उपजाति हैं'' आता था, नामत;, अनाज, नया दाखरस और तेल (व्यवस्थाविवरण 14:22–23; 26:24; 26:12 गिनती 18:27–30; नहेम्याह 10:37; 13:12)। अन्य अंशों के अनुसार, दशमांश में ''मिट्टी से अनाज, पेड़ो से फल, जानवरों के झुंड या झुण्ड से हर दसवां'' जो चरवाहे की लाठी के निचे से गुजरता है, अर्थात, वार्षिक गिनती के दौरान सभी नवजात जानवरों में से आता था (लैव्यव्यवस्था 27:30, 32:2 इतिहास 31:6; यर्मियाह 33:13)।

3. <u>दशमांश की मंजिल पूरी तरह स्पष्ट रूप से तय नहीं थी</u>।

पुराना नियम एक पवित्र दशमांश नहीं, परन्तु तीन पवित्र दशमांश के बारे में बोलता है !

(1) पहला दशमांश लेवियों के लिए दशमांश था।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 27:30–33; गिनती 18:5–7, 20–24।

पहला दशमांश मिलापवाले तम्बू में समारोहपूर्ण सेवा के लिए था। परमेश्वर ने लेवी के गोत्र को मिलापवाले तम्बू में और बाद में मन्दिर में अपनी सेवा के लिए अलग किया। केवल लेवियों का एक परिवार, हारुन का परिवार,गवाही के तम्बू में याजक के रूप में, परदे के अन्दर, और वेदी पर हर चीज के साथ सेवा करेंगे। लेवियों के बाकी मिलापवाले तम्बू के वहाँ अन्य काम करेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने लेवियों को अपनी सेवा के लिए बुलाया, परमेश्वर ने उनकी आजीविका की भी व्यवस्था की थी। परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस्राएलियों के दशमांश मिलापवाले तम्बू में सेवा करने वालों को दिए जायेंगे, अर्थात, लेवी गोत्र के लिए।

<u>पहला दशमांश लेवियों के लिए था।</u> इस्राएल में दशमांश लेवियों को देने के लिए हैं, इस्राएल की भूमि की वरासत के हिस्से और मिलापवाले तम्बू में अपने काम के वेतन के रूप में सेवा के लिए हैं।

<u>पहले दशमांश का दशमांश याजकों के लिए था।</u> तथापि,लेवियों को इन अनाज और दाखरस के दशमांश का सबसे अच्छा दसवां हिस्सा याजकों को देना पड़ता था। परमेश्वर के प्रति दशमांश का दशमांश लेवियों के पहले फल के रूप में सेवा थी, जैसे कि सभी इस्राएलियों को सबसे बेहतरीन तेल, दाखरस और अनाज अपनी उपज के पहले फल के रूप में परमेश्वर को देना होता था (गिनती 18:12)।

परमेश्वर ने निम्नलिखित को याजकों की आमदनी के रूप में समनुदेशित कियाः

- अति पवित्र भेंट, पवित्र भेंट, हिलाई जानेवाली भेंट के अलग किये भाग, फसल के पहले फल, परमेश्वर को समर्पित हर एक चीज और पहलौठे (गिनती 18:8–19 व्यवस्थाविवरण 18:1–5)।
- लेवियों को दिए गए सभी दशमांश का दसवां भाग (गिनती 18:25–28)।
- युद्ध की लूट का हिस्सा (गिनती 31:25–29) और अधर्म के लिए क्षतिपूर्ति, यदि वास्तविक मालिक मर गया और कोई करीबी रिश्तेदार नहीं है (गिनती 5:6–10)।

(2) दूसरा दशमांश परमेश्वर की उपस्थिति में आनंदपूर्ण पर्व के लिए दशमांश था।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 12:5–7,11–19; 14:22–27।

दूसरा दशमांश येरुशलेम में आनंदपूर्ण पर्व के लिए था। समस्त इस्राएल के अनाज, नए दाखरस और तेल की उपज का दशमांश परमेश्वर की उपस्तिथि में उसके नाम के आवास स्थान पर खाये जाते थे, अर्थात, यरूशलेम के मंदिर में। इसी समय झुंडों और झुण्डों के पहलौठे भी खाये जाते थे और ये इस बलिदान के भोजन में मांस के भाग के रूप में कार्य करते थे (व्यवस्थाविवरण 15:19–20)। यह हर साल हुआ, संभवतया उस समय के दौरान जब इस्राएली शरद ऋतु में झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए येरुशलेम को जाते थे (निर्गमन 23:16)। यहाँ, दशमांश को लेवियों के लिए आय के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के साथ सहभागिता करने के लिए एक साधन के रूप में माना जा रहा है !
यदि एक इस्राएली यरूशलेम को अपने दशमांश ले जाने के लिए बहुत दूर रहता था, तो उसको उसे बेचने की अनुमति थी और जो चाहे उसे पैसे से खरीद सकता थारू मवेशी, भेड़, दाखरस, अन्य किण्वित पेय या जो भी वह पर्व के लिए चाहता था (यूहन्ना 2:13–14)। इकठ्ठे अपने सम्पूर्ण परिवार, दासों, और अपने नगर के लेवियों के साथ, वह परमेश्वर की उपस्तिथि में यह खाता था, इस प्रकार हमेशा परमेश्वर को आदर देना सीखता रहता था।

बाद के यहूदी धर्म में दूसरा दशमांश । पहली शताब्दी ई. में यहूदी शिक्षकों ने दशमांश को '' एक दूसरा दशमांश '' बना दिया, लेवियों को पहला दशमांश देने के लिए अलग करने के बाद नौ–दसवें हिस्से में से दसवां हिस्सा निकलना। यह संभव है कि यह ''दूसरा दशमांश '' का सचमुच में कोई मतलब नहीं था, क्योंकि ऐसा सोचना उचित नहीं है कि बहुत सारा खाना पहलौठे जानवरों के माँस के साथ एक ही बलिदान भोज में उपभुक्त किया जाता था। हो सकता है शब्द ''दशमांश'' फिर ''पूरे का एक हिस्सा'' अर्थ में तकनीकी अर्थ की तुलना में अधिक लोकप्रिय था। दूसरे हाथ पर, वहाँ शाब्दिक अर्थ न स्वीकार करने के लिए कोई कारण नहीं है और ध्यान दें कि इस तरह के भव्य उत्सव भोजन होने के लिए ही बने थे। स्पष्ट रूप से हम आज नहीं जानते कि क्या वास्तव में उन दिनों में क्या मतलब था।

(3) तीसरा दशमांश जरूरतमंद लोगों के लिए दशमांश था।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 14:28–29; 26:12–15।

जरूरतमंद और उसके मृत्यूत्तर गित के लिए तीसरा दशमांश। हर तीन साल के अंत में उस साल की उपज के दशमांश उन लेवियों को खाना देने के लिए नगरों में इकठ्ठे किये जाते थे जिनके पास अपनी कोई आवंटन या वरासत नहीं थी, और पराये मनुष्यों, अनाथों और विधवाओं के लिए जो उन शहरों में रहते थे। सामान्य में, यह जरूरतमंद लोगों के लिए एक दशमांश था। वह जरूरतमंद लोग आकर खा सखते थे और संतुष्ट हो सकते थे। जिसका अर्थ है कि वे इस तरह अपनी आजीविका के लिए सहारा प्राप्त कर सकते थे। यह दशमांश हर्षित बलिदान भोज का उल्लेख नहीं कर सकता, क्योंकि वह यरूशलेम में आयोजित किया जाता था।

हालांकि, इस दशमांश के पवित्र चरित्र को बनाए रखने के लिए, मृत्यूत्तर गित के बाद इस दशमांश को लाना निर्धारित किया गया था। लाने वाले को परमेश्वर के सामने घोषणा करनी पड़ती थी, संभवतया येरुशलेम की यात्रा के दौरान (व्यवस्थाविवरण 26:13–15)। उसे घोषणा करनी पड़ती थी की वह पूरा दशमांश लाया है और यह की उसने इसको अशुद्ध नहीं किया जब यह उसके घर में था। इस दशमांश को ''पवित्र भाग'' कहते हैं क्योंकि, हालांकि यह वास्तव में आराधनालय में नहीं लाया गया था, तब भी यह परमेश्वर के लिए समर्पित था (जैसे परमेश्वर की सेवा)। घोषणा नई कृषि वर्ष के लिए एक आशीष के साथ समाप्त हो जाती थी।

दूसरा दशमांश हर तीसरे साल तीसरा दशमांश हो जाता है। '' तीसरे वर्ष का दशमांश '' (व्यवस्थाविवरण 14:28–29) शायद परमेश्वर की उपस्थिति में हर्षित भोज के लिए दशमांश के रूप में ही है '' दूसरा दशमांश '' (व्यवस्थाविवरण 14:22–27), लेकिन हर तीसरे साल यह एक अलग गंतव्य के लिए दिया गया था, अर्थात् गरीब के लिए। दशमांश का आकार शायद वास्तविक में दसवां भाग था। पहली शताब्दी ईस्वी में यहूदी शिक्षक इस दशमांश को '' गरीबों के लिए दशमांश '' कहते थे।

निष्कर्ष। यदि व्यवस्थाविवरण 14:28 को '' तीसरे वर्ष की दूसरी दशमांश '' के रूप में समझा जाए, तो पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर के लोगों को वास्तव में कम से कम दो दशमांश अलग निकालने आवश्यक थे, जो उनकी उपज के पांचवें हिस्से के बराबर,

परमेश्वर और इस्राएल में उसकी सेवा करने के प्रति थे। मंदिर में सेवा की मदद के लिए हर वर्ष एक दशमांश लेवियों के पास जाता था। और हर साल दो सालों के लिए दूसरा दशमांश येरुशलेम में पर्व के खाने के लिए इस्तेमाल होता था। परन्तु हर तीसरे साल यह दूसरा दशमांश गरीबों के लिए उनके नगर में अलग किया जाता था।

4. दशमांश इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को भूमि–किराए के भुगतान की तरह थे।

दशमांश परमेश्वर के थे। वे '' परमेश्वर के प्रति पवित्र '' थे, अर्थात, वे परमेश्वर के लिए अलग किए होते थे और परमेश्वर की सेवा के प्रति समर्पित थे (लैव्यव्यवस्था 27:30)। पवित्र भूमि (इस्राएल) प्रभु की थी, परन्तु इस्राएलियों को उसके फल खाने की अनुमति थी (लैव्यव्यवस्था 25:23)। दशमांश एक प्रकार से किरायेदारों (इस्राएली) के द्वारा मालिक (परमेश्वर) को भूमि–किराए का भुगतान था। दशमांश देने ने व्यक्त किया कि इस्राएली पवित्र भूमि के किरायेदारों से ज्यादा कुछ नहीं थे ! वे कभी भी पवित्र भूमि के मालिक नहीं थे। खेतों और जानवरों के झुण्डों की अच्छी उपज ने परमेश्वर की अच्छाई की घोषणा की। इसलिए इस्राएलियों ने उस उपज के एक हिस्से को श्रद्धांजलि के रूप में मालिक को दिया था।

5. दशमांश का आदान–प्रदान नहीं किया जा सकता है, लेकिन धन देकर बचाया जा सकता है।

एक यहूदी लेख के अनुसार (बेकोरोथ 58ब), जानवरों को एक वी के आकार भेड़शाला में एक समय में केवल एक पशु के निकास के साथ संचालित किया जाता था। वे चरवाहे के द्वारा उनकी गिनती करते हुए उसकी लाठी के निचे से निकलते थे (यिर्मयाह 33:13)। चरवाहा हर दसवें जानवर को अपनी लाठी से छूता था और ये लाल रंग के साथ लकड़ी के एक टुकड़े से चिह्नित किये जाते थे। मालिक को इस तरह से इस प्रक्रिया को व्यवस्थित नहीं करना होता था कि वह खुद के लिए सबसे अच्छा जानवरों को रख सके। यदि वह भेड़ों का आदान प्रदान करने का दोषी पाया जाता था,अथार्त, अपने लिए एक अच्छा जानवर उठाने जबकि परमेश्वर को एक बुरा जानवर देने का, तो दोनों ही जानवर परमेश्वर को देने होते थे। फिर भी, किसी भी वस्तु के रूप में दशमांश को धन देकर बचाना, उदाहरण के लिए एक विशेष भेड़ के लिए, अनुमति दी गई थी। यदि मालिक दशमांश का कोई भी भाग (विशेष रूप से वही भेड़) अपने लिए रखना चाहता था, वह दशमांश को पैसे में बदल सकता था, लेकिन फिर उसे दशमांश के मूल्य का पांचवां भाग जोड़ना पड़ता था और प्रभु को देता था (लैव्यव्यवस्था 27:30–33) ।

ग. देश–निष्कासन के बाद दशमांश

देश–निष्कासन के बाद, दशमांश एक प्रकार से मंदिर के सेवकों के सहारे और मंदिर सेवा को बनाए रखने के लिए मंदिर कर बन गया।

1. नहेम्याह ने राज्यपाल होने की अपनी पहली अवधि के दौरान फिर से दशमांश की शुरूआत की (445–433 ई.पू.)।

देश–निष्कासन से बाबुल को वापसी के बाद (538 ई.पू.), इस्राएलियों ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया (एज्रा 6:15, 521–516 ई.पू.)। बाद में, अगुवों , याजकों और लेवियों ने एक बाध्यकारी समझौता बनाया, उसे लिखित किया और उस पर अपनी मोहरें लगा दीं (नहेम्याह 9:38), जिसमें उन्होंने मूसा के द्वारा दी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने का वादा किया (नहेम्याह 10:29)। इसमें बाहरी लोगों से शादी नहीं करने का मुद्दा, सब्त को रखना, एक प्रकार के मंदिर कर का भुगतान करके मंदिर सेवा को बनाए रखना, बलिदान की आग के लिए लकड़ी का योगदान, फसल के पहले फल के साथ ही गाय–बैल और भेड़–बकरी का पहलौठा लाना, और अंत में लेवियों के पास अपनी फसलों का एक दशमांश लाना (नहेमायाह 10:30–39) शामिल था।

हालांकि, वहाँ मूसा की व्यवस्था के संबंध में एक अंतर था (1447–1407 ई.पू.)। देश–निष्कासन के बाद, लोग मंदिर में दशमांश नहीं लाये, परन्तु लेवीयों को बाहर जाना पड़ा और हर शहर में लोगों से दशमांश इकट्ठा करना पड़ा। यह याजकों की देखरेख में किया गया, जिन्होंने दशमांश का दसवां हिस्सा पाया। दशमांश मंदिर के आंगन में भंडारों में संग्रहीत किया गया (नहेम्याह 10:37–39)। इस प्रकार, नहेम्याह के दिनों में, याजकों और लेवियों ने, जिनमें गायक और द्वारपाल शामिल थे, अपनी आय दशमांश से प्राप्त करी (नहेम्याह 12:44–47)।

2. मलाकी ने इस्राएलियों को दशमांश लाने के लिए चेताया (432–420 ई.पू.)।

बाद में, जब नहेम्याह यरूशलेम से अनुपस्थित था (433–432 ई.पू.), मंदिर के भंडार–गृह के प्रभारी याजक ने लेवियों के भुगतान को नजरअंदाज कर दिया और इस तरह उन्हें मंदिर में सेवा करने के बजाय अपने स्वयं के आय को अर्जित करने के लिए वापस ग्रामीण इलाकों में जाने को मजबूर किया (नहेम्याह 13:4–10)।
मलाकी नबी के माध्यम से, परमेश्वर ने इस्राएल को उसे दशमांश और भेंटों में लूटने के लिए डांटा (मलाकी 3:6–12) और इस तरह

यरूशलेम के मंदिर में उसकी आराधना होने में लूटने के लिए। वास्तव में, परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के समय से उसकी राजाज्ञाओं से दूर रहे इस्राएलियों को दोषी ठहराया। इस्राएलियों ने वास्तव में कभी व्यवस्था नहीं राखी थी और न ही दशमांश की व्यवस्था। इस लापरवाही का यह परिणाम था कि परमेश्वर फिर से इस्राएल पर एक अभिशाप ले आया था, जिसमें सूखे (हाग्गै 1:2–11) और टिड्डियों (योएल 1:4,13) के कारण फसल की विफलता शामिल थी। परमेश्वर ने उन्हें खेतों की उपज का सारा दशमांश भंडारगृह में लाने के लिए प्रबोधित किया, जो येरुशलेम में मंदिर के आंगन में खड़ा है, जिससे इतना हो कि वहाँ मंदिर के सेवकों के लिए पर्याप्त सहारा हो सके और मंदिर सेवा जारी रह सके। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा करी, कि यदि इस्राएलियों ने ऐसा किया, परमेश्वर फिर से स्वर्ग के जलद्वार

खोल देंगे और उनकी खेतों पर वर्षा करेंगे (उत्पत्ति 7:11–12), इसका नतीजा होगा प्रचुर मात्रा में फसल और वह उनकी फसलों के भक्षण से टिड्डियों को रोकेगा (मलाकी 3:11–12)।

मलाकी 3:10 नए नियम की अवधि के दौरान मसीहों के लिए एक आज्ञा नहीं है, लेकिन पुराने नियम की अवधि के दौरान यहूदियों के लिए समारोहपूर्ण व्यवस्था का पालन करने के लिए संबोधन है (दशमांश और जानवर बलिदान, आदि) और इस प्रकार पुराने नियम की मंदिर सेवा, याजकों और लेवियों को बनाए रखने के लिए।

3. नहेम्याह ने अपने राज्यपाल होने के दूसरी अवधि के दौरान फिर से दशमांश को बहाल किया (432 ई.पू.)।

प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से लोगों ने मलाकी के उपदेश पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि जब नहेम्याह वापिस येरुशलेम आया, उसको अपना पुराना काम बहाल करना पड़ा, नहेम्याह ने अधिकारियों को डांटा, लेवियों को वापिस उनके काम पर बुलाया, यह देखा कि दशमांश यरूशलेम में भंडार गृह में लाये जाएँ और भरोसेमंद पुरुषों को लेवियों और याजकों के ये उपहार के वितरण की जिम्मेदारी लेने के लिए नियुक्त किया (नहेम्याह 3:11–13)।

घ. दशमांश का इतिहास

दशमांश का इतिहास पुराने नियम में पूरी तरह स्पष्ट नहीं है

1. निर्गमन की शुरुआत में दशमांश (1447 ई.पू.)।

सीनै पर मूसा की सेवकाई की शुरुआत के दौरान, ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' साथ ही साथ ''झुंड और झुण्ड का दशमांश'' परमेश्वर के थे (लैव्यव्यवस्था 27:30,32)।

2. निर्गमन के दौरान दशमांश (1446 –1407 ई.पू.)।

बाद में, हारून की उच्च याजकपन के दौरान, केवल ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' लेवियों की आय के रूप में उल्लेख किया गया है (गिनती 18:20–32)।

3. निर्गमन के अंत में दशमांश (1407 ई.पू.)।

बाद में, मूसा के समय के अंत की ओर, ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' आराधनालय में पर्व के भोजन में सेवन के लिए लाया जाता था, जबकि, हर तीसरे साल इस दशमांश था स्थानीय लेवियों और जरूरतमंद लोगों के बीच सहारे के एक प्रकार के रूप में विभाजन किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 12:6–7,11–12,17–19; 14:22–29)।

4. देश–निष्कासन से पहले दशमांश (713–696 ई.पू.)।

देश–निष्कासन से पहले, राजा हिजकिय्याह ने मंदिर शुद्ध करवाया, मंदिर में आराधना बहाल करी, याजकों और लेवीयों के कर्तव्यों को फिर से उनको सौंपा, मंदिर के सेवकों के कारण लोगों को अपने हिस्से लाने के लिए आदेश दिया, एक ''प्रभु को समर्पित पवित्र वस्तुओं का दशमांश'' इनमें शामिल हैं ''भूमि की सारी उपज का दशमांश'' (अनाज, दाखरस, तेल, शहद) साथ ही साथ ''झुंड और झुण्ड का दशमांश'' (2 इतिहास 31:2–10) ।

5. देश–निष्कासन के बाद दशमांश (445–420 ई.पू.)।

देश–निष्कासन के बाद, '' भूमि की सारी उपज का दशमांश '' ने एक प्रकार के मंदिर कर के चरित्र का अधिग्रहण कर लिया, लोगों द्वारा लाया नहीं, परन्तु लेवीयों और याजकों द्वारा एकत्र किया गया उन्हें मंदिर सेवकों के रूप में सहारा देने के लिए (नहेमायाह

10:37–39;13:12–13;मलाकी 3:6–12)।

6. पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान दशमांश।

इतिहासकार जोसेफस (1 शताब्दी ईस्वी) के समय के दौरान यहूदी शिक्षकों ने इस प्रकार से समस्या का हल कियारू

- हर साल यहूदियों को अपने पहले दशमांश लेवियों को जरुर देने चाहिए। लेवियों को इस दशमांश का दसवां भाग याजकों को देना चाहिए। यह मंदिर सेवा में लेवियों और याजकों के साहारे के रूप में है (लैव्यव्यवस्था 27:30,32, गिनती 18:20–32)।

- हर साल यहूदियों को यरूशलेम में अपना दूसरा दशमांश जरुर लाना होगा। इसने मंदिर में बलिदान भोजन के लिए भोजन के रूप में सेवा की है (व्यवस्थाविवरण 14:22–27)।
- हर तीसरे वर्ष यहूदियों को अपने शहरों में अपने तीसरे दशमांश को भंडार में जमा करना चाहिए। इसने उस नगर में गरीबों के लिए सहारे का काम किया (व्यवस्थाविवरण 14:28–29; 26:12–15)।

निष्कर्ष। पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान यहूदी शिक्षकों ने वास्तव में यहूदियों के लिए हर साल दो दशमांश और तीन दशमांश हर तीसरे वर्ष अलग करना आवश्यक कर दिया ! हालांकि, यहूदियों के कानून के शिक्षक कानून बनाने के लिए लोकप्रसिध्द थे, लेकिन उन्हें रखने के लिए नहीं (मत्ती 23:1–4; लूका 11:46)।

ङ मसीह के सूली पर चढ़ने से पहले नए करार में दशमांश

पढ़ें मत्ती 23:23–24। फरीसियों और कानून के शिक्षकों ने 613 विशेष कानून तैयार किए (365 रोक और 248 आज्ञाएँ) मूसा की व्यवस्था के अनुवाद के रूप में। इन कानूनों को बड़ों की परंपरा कहा जाता था (मरकुस 7:3)। यीशु ने उनके बारे में कहा,'' ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपादेश करके सिखाते हैं।'' '' क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो। ... इस प्रकार तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो (मरकुस 7:7–8,13)।'' वे कपटी थे, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के लिए पुराने नियम की व्यवस्था की आवश्यकताओं को अधिक बढ़ाया और अधिक–खिंचा।

उदाहरण के लिए, वे छोटी खुशबूदार जड़ी बूटियाँ दशमांश में देते थे, जो उनके बाग में उगती थीं और उनके भोजन में मसाले के रुप में इस्तेमाल की जाती थीं। हालांकि पुराने नियम की व्यवस्था में इसकी आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने कभी भी अपने अनुयायियों (यहूदी और परधर्म अनुयायी) से ऐसा ही करने की माँग नहीं की। पुराने नियम की व्यवस्था जड़ी बूटी ,पुदीना,सोआ और जीरे के दशमांश के बारे में कुछ नहीं कहती। इसके बजाए, व्यवस्था ने ,'' भूमि की सारी उपज '' की मांग की है। तत्काल संदर्भ में विस्तार से बताया है कि पमेश्वर का इरादा था की इसमें '' अनाज, नया दाखरस और भूमि से तेल '', '' पेड़ों से फल '' और '' झुंडों और झुण्डों में से पहलौठे '' हों। फरीसियों और कानून के शिक्षकों ने बाईबल के मूल्यों को उल्टा कर दिया। उन्होंने छोटे मुद्दों पर जोर डाला और व्यवस्था के महत्यपूर्ण मुद्दे, जैसे न्याय, दया और विश्वासयोग्यता को नजर अंदाज कर दिया।

यीशु कहते हैं कि फरीसियों को व्यवस्था द्वारा आवश्यक दशमांश को नजर अंदाज न करते हुए न्याय, दया और विश्वासयोग्यता का अभ्यास करना चाहिए था, यहूदियों को यह कहते हुए यीशु छोटी खुशबूदार जड़ी बूटियों के दशमांश का समर्थन नहीं करते हैं, इस प्रकार अपने ही तर्क को हराते हैं। वह बल्कि कहते हैं कि पुराने नियम की व्यवस्था में और अधिक महत्वपूर्ण मामलों की उपेक्षा के बिना दशमांश को सम्मान देते हुए पुराने नियम के अध्यादेश को देखना चाहिए।

यह ध्यान रखना महत्यपूर्ण है कि यीशु कहते हैं, यह मसीहों के लिए नहीं, लेकिन यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण है और यीशु ने अपने सूली पर चढाये जाने से पहले यह कहा, जब कलीसिया की अभी स्थापना भी नहीं हुई थी ! यीशु के मृत्यु से पहले, परमेश्वर के समीप जाने और उसकी आराधना करने के लिए पुराने नियम की आवश्यकताऐं अभी भी जगह में थीं। जब तक मसीह को अभी क्रूस पर चढ़ाया नहीं गया था – और इस तरह – तब तक परमेश्वर के पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था के नियम अभी तक पुरे, रद्द और निराकृत नहीं हुए थे, दशमांश के संबंध में नियमन अभी भी मान्य थे (लूका 18:12)।

बाईबल के सही अनुवाद के लिए कुछ महत्यपूर्ण नियम निम्न प्रकार से हैं:

- श्रोतागणों पर ध्यान दें। यीशु ने यहूदी फरीसियों और व्यवस्था की शिक्षकों से बोला और मसीहों से नहीं।
- समय पर ध्यान दें। अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु ने उनसे बोला, जिसने समारोहपूर्ण व्यवस्था के लिखित नियमों को पूरा, रद्द और निराकृत किया, दशमांश सहित।
- इरादे पर धयान दें। यीशु का यहूदी फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों को सिखाने का इरादा था कि उनके पास बाईबल के मूल्यों और सत्य को मोड़ने का कोई अधिकार नहीं था (मत्ती 15:1–20)। मत्ती 23:23–24 में यीशु का मसीहों को सीखने का कोई इरादा नहीं था कि मसीहों को दशमांश देना चाहिए !

च. नए नियम में यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के बाद दशमांश

1. बाईबल में शब्द ''कानून'' के कई अर्थ हैं।

(1) परमेश्वर की आवश्यकता के रूप में कानून।

परमेश्वर का कानून है परमेश्वर की पवित्र और धर्मी आवश्यकता कि सभी लोग 100% सही जीवन जीने चाहिए और यह कि उसकी व्यवस्था के अपराधों को दण्डित किया जाना चाहिए।

सभी लोग ''परमेश्वर की व्यवस्था के निचे हैं'' (रोमियों 2:12–16)। परमेश्वर का कानून सिद्ध धार्मिकता की मांग करता है। परन्तु क्योंकि किसी ने उसकी व्यवस्था को नहीं रखा (याकूब 2:10) और कोई प्राकृतिक मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था रख नहीं सकता (रोमियों 8:7–8), सभी लोग निन्दित (बर्बाद) हैं (रोमियों 3:19; 8:1) और परमेश्वर के श्राप के निचे हैं (गलातियों 3:10)। एक भी व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था को रखने से न्यायसंगत नहीं ठहरेगा (गलातियों 2:16, रोमियों 3:20)। कोई भी परमेश्वर की पवित्र और धार्मि आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता !

परमेश्वर की पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं को पुराने नियम की अवधि के दौरान नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था में व्यक्त किया गया है।

(2) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नैतिक आवश्यकताओं के रूप में कानून।

परमेश्वर का कभी इरादा नहीं था कि उसकी नैतिक व्यवस्था, दस आज्ञायों में संक्षेपित (निर्गमन 20:1–17) या प्यार की व्यवस्था में (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18), लोगों द्वारा धार्मिकता पाने की कोशिश के साधन बन जाएँ, क्योंकि इस व्यवस्था को पाने से पहले लोग बचे थे (निर्गमन 20:1–2) ! नैतिक कानून परेमश्वर की आवश्यकताएँ थी कि कैसे उसके बचाये हुए लोग (इस्राएली) परमेश्वर के लोग होते हुए इस संसार में जी सकें।

(3) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की समारोहपूर्ण आवश्यकताओं के रूप में कानून।

समारोहपूर्ण (अनुष्ठान) व्यवस्था परमेश्वर की माँगें थी कि कैसे उसके लोग (इस्राएली) समीप आयें और परमेश्वर की आराधना करें । समारोहपूर्ण व्यवस्था को पवित्र व्यक्तियों (याजक, लेवी), पवित्र स्थान (मिलाप का तम्बू, मंदिर), पवित्र समय (सब्त, पर्व और एक दिन का उपवास), पवित्र कार्य (खतना, बलिदान, भेंटें, पहला फल, पहलौठे और दशमांश लाना, प्रक्षालन और केवल शुद्ध खाद्य पदार्थ खाने) के बारे में व्यवस्था में विभाजित किया गया। याद रखें कि तथाकथित ''पहला दशमांश'' का एक धार्मिक कर के रूप में इस्राएल के धार्मिक मंदिर सेवा की सहायता करने के लिए कार्य करता था और तथाकथित ''दूसरा दशमांश'' का एक प्रकार से इसराइल में धार्मिक–सामाजिक त्योहार के रूप में कार्य था।

(4) पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नागरिक आवश्यकताओं के रूप में व्यवस्था।

परमेश्वर का कभी ऐसा इरादा नहीं था कि इस्राएल दुनिया के सभी अन्य देशों के रूप में एक राजनीतिक राज्य हो। उसका इरादा था कि खुद राजा के रूप होते हुए इसराइल एक धर्मशासित राज्य हो (1 शमूएल 8:7–20; यूहन्ना 18:36–37) ! नागरिक (सामाजिक) व्यवस्था परमेश्वर की आवश्यकताएँ थीं कि कैसे उसके लोगों को (इस्राएल) एक धर्मशासित राज्य के रूप में कार्य करना चाहिए। नागरिक व्यवस्था विशेष रूप से धर्मशासित राज्य इस्राएल के कानून प्रणाली के साथ निपटती थीः कानून जो संपत्ति,शादी, रोग, अपराध, गुलाम, युद्ध और राजाओं से संबंधित था। याद रखें कि तथाकथित ''तीसरा दशमांश'' एक सामाजिक कर प्रणाली के रूप में कार्य करता था जो इस्राएल के धर्मशासित राज्य के भीतर गरीब और जरूरतमंद लोगों को सहायता करता था।
इसके अलावा, राजा अपने सांसारिक परिचारकों को देने के लिए अपने लोगों को उनके पुरुषों, भूमि, फसल, अंगूर की पैदावार और भेड़–बकरियों का दसवां भाग भुगतान करने के लिए मजबूर करता था (1 शमूएल 8:7–20)।

2. यीशु मसीह के पहले आगमन पर कानून पूरा किया गया था।

(1) नैतिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था को दो तरीकों में पूरा किया गया था। अपने पहले आगमन में यीशु मसीह ने विश्वासियों के स्थान पर परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं को पूरा किया और उसने परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के सही अर्थ की घोषणा की।

परमेश्वर की धर्मी आवश्यकताओं को 100% पूरा दिया जब यीशु मसीह की क्रूस पर मरे और मरे हुओं में से पुनर्जीवित हुए यह साबित करने के लिए कि पिता परमेश्वर ने हमारे स्थान पर उद्धार के पूरे काम को स्वीकार कर लिया है। यीशु मसीह ने एक पूर्ण निष्पाप जीवन जीने के द्वारा परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा किया (इब्रानियों 7:26) और एक–बार–हमेशा–के लिए अपने लोगों (वह लोग जो उसमें विश्वास करते हैं) के सभी पापों के प्रायश्चित के लिए एक आदर्श बलिदान के रूप में क्रूस पर मरे (इब्रानियों 7:27)। क्रूस पर अपने लोगों के लिए अभिशाप बनने के द्वारा उन्हें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ा लिया (गलतियों 3:13) । यीशु मसीह इस प्रकार हमेशा के लिए सिद्ध महायाजक बन गए (इब्रानियों 7:28)।

यीशु ने उद्धार के सन्देश (मरकुस 1:14–15) और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के सही अर्थ की घोषणा की। उसने यह घोषणा करी कि कैसे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के बचाये हुए लोगों की तरह जीना चाहिए (मत्ती 5:17–48 और सब दृष्टान्त)। यीशु मसीह इस प्रकार अनंतकाल के लिए सिद्ध नबी बन गए (व्यवस्थाविवरण 18:18–19; प्रेरितों के काम 3:22–23)।

इस प्रकार, नैतिक व्यवस्था पूरी हुई और मसीह के जीवन और शिक्षा में अपने सिद्ध अर्थ को पाया। नैतिक व्यवस्था पूरी की गई, परन्तु रद्द नहीं। नैतिक व्यवस्था आज भी परमेश्वर के लोगों के लिए इस संसार में कैसे जीने की आवश्यकता है (मत्ती 22:36–40, रोमियो 13:8–10) !

(2) समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति।

यीशु मसीह के पहले आगमन पर पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था की सभी परछाईयाँ, प्रकार और रसमें नए नियम के प्रकाशन में वास्तविकताएँ बन गयीं (इब्रानियों 8:5; 10:1–4; नीचे देखें 4–5 बिंदु)।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी हुईं। ष्यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूंष (मत्ती 5:17) ।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ रद्द हुईं। ''उसने हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, लिखित संहिता को रद्द किया (अर्थात परमेश्वर की धर्मी आवश्यकता को सिद्ध करने और सारी अधार्मिकता को दंडित करने के लिए), उसके नियमों के द्वारा (समारोहपूर्ण व्यवस्था), जो हमारे खिलाफ था और हमारे विरोध में खड़ा था (क्योंकि किसी ने उसे नहीं रखा या रख सकता है); उसने उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया'' (कुलुस्सियों 2:13–14)।

इस प्रकार समारोहपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकताएँ निराकृत हुईं। मसीह ने बाधा को नष्ट कर दिया है, दुश्मनी के विभाजन की दीवार (यहूदी मसीही जिन्होंने व्यवस्था रखने की कोशिश की और अन्यजाति मसीही जिन्होंने व्यवस्था नहीं रखी के बीच) अपने शरीर में व्यवस्था को आज्ञाओं और नियमों के साथ खत्म करके (इफिसियों 2:14–15)।

(3) नागरिक व्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति।

अपने पहले आगमन पर यीशु ने अपने राज्य की स्थापना करी, केवल इस्राएल में ही नहीं, परन्तु सरे विश्व में ! वह सिद्ध राजा बन गया, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशितवाक्य 19:16),जिसको धरती पे सारा अधिकार मिला है (मत्ती 28:18) और जिसका राज्य अन्य सभी राज्यों को चकनाचूर कर देगा और उनका अंत कर देगा (दानिय्येल 2:44)। नए नियम में परमेश्वर के राज्य के बारे में उसकी सभी शिक्षाएं और दृष्टान्त पुराने नियम में इस्राएल के धर्मशासित राज्य की नागरिक व्यवस्था को प्रतिस्थपित करते हैं (मत्ती 21:42–44), दुनिया में सभी राष्ट्रों की व्यवस्था से बढ़कर, और दिशा निर्देश बन गए हैं जिसके द्वारा उसके लोगों को दुनिया के हर देश में रहना चाहिए (मत्ती अध्याय 5 से 7)।

इस प्रकार राष्ट्र–इस्राएल के राज्य की नागरिक व्यवस्था की आवश्यकताओं को नए नियम में पढ़ाये गए परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों के द्वारा प्रतिस्थपित किया गया है।

(4) नए नियम की अवधि में नैतिक व्यवस्था का कार्य।

नए नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का कार्य पुराने नियम की अवधि के दौरान नैतिक व्यवस्था के समान है। नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की नजर में कभी भी न्यायसंगत होने का साधन नहीं थी और अब भी परमेश्वर की नजर में न्यायसंगत होने का साधन नहीं है।

एक हाथ पर नैतिक व्यवस्था कानून तोड़ने वालों, विद्रोहियों, धर्मभ्रष्ट और पापी, अपवित्र और अधार्मिक और जो कुछ परमेश्वर की मजबूत शिक्षा के विपरीत है को बेनकाब और निंदित करती है (1 तीमुथियुस 1:8–11), ताकि लोगों को एहसास हो कि उन्हें मुक्तिदाता यीशु मसीह की जरुरत है !

दूसरे हाथ पर नैतिक व्यवस्था अब भी परमेश्वर की दिशानिर्देश है अपने लोगों (मसीहों) को दिखाते हुए कैसे इस संसार में उन्हें परमेश्वर के लोग होते हुए जीना है (मत्ती 22:37–40, रोमियों 13:8–10य गलातियों 5:14)। मत्ती 5:21–48 में यीशु मसीह अपने राज्य में परमेश्वर के लोग होते हुए जीने के लिए नैतिक व्यवस्था को परमेश्वर के दिशानिर्देश के रूप में सिद्ध अर्थ देते हैं। नैतिक व्यवस्था कभी भी रद्द या निराकृत नहीं हुई !

3. यीशु मसीह के पहले आगमन पर व्यवस्था रद्द कर दी गई थी।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:13–14।

(1) व्यवस्था ने सभी लोगों पर आरोप लगाया और की निंदा की।

''लिखावट'' (लिखित संहिता) स्पष्ट रूप से पुराने नियम की व्यवस्था को अपने दोनों नैतिक और औपचारिक पहलुओं में संदर्भित करता है (कुलुस्सियों 2:16–17)। इस्राएलियों को एक लिखित अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा जा सकता है जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के नियमों और विनियमों का पालन करने के लिए खुद को एक अभिशाप के द्वारा बाँध लेते हैं (व्यवस्थाविवरण 27:26)। जबकि कोई भी कभी व्यवस्था को रखने में सक्षम नहीं हुआ (रोमियों 3:10–12, याकूब 2:10), हर एक परमेश्वर के अभिशाप के निचे था (गलातियों 3:10)। परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था सभी लोगों के लिए एक विरोधी थी, उन पर परमेश्वर के पवित्र और धर्मी आवश्यकताओं का उल्लंघन का आरोप लगाती थी, और उन्हें परमेश्वर के सामने अपराध बोध और शर्म करने के लिए निंदित करती है (रोमियों 3:19–20)। परमेश्वर की व्यवस्था ने लोगों को उनके पाप दिखाए और इस प्रकार उनकी उद्धार की जरूरत (रोमियों 7:7–8)। परमेश्वर की व्यवस्था ने पुराने नियम की अवधि के दौरान मसीह के पहले आगमन तक लोगों पर अधीक्षण करना, आरोप लगाना और निंदा करना जारी रखा (गलातियों 3:24–25)। व्यवस्था लोगों के खिलाफ थी और लोगों के खिलाफ खड़ी हुई (कुलुस्सियों 2:14)।

(2) यीशु मसीह ने उस में विश्वासियों के लिए व्यवस्था को रद्द (निरसित, निराकृत) कर दिया।

अपनी मृत्यु पर व्यवस्था को कीलों से क्रूस पर ठोक देने के द्वारा, यीशु मसीह ने व्यवस्था को परमेश्वर की नजर में कम जाना हुआ अपेक्षा के औचित्य साधन के रुप में लिया। यीशु मसीह में विश्वासियों के लिए व्यवस्था की माँगें मर गयीं जब यीशु मसीह मरा। व्यवस्था की माँगें अब उनको और निंदित नहीं करती हैं। परन्तु यीशु में विश्वास रखनेवाले भी व्यवस्था की माँगों के प्रति मर गए जब वह मसीह के साथ मरे। वे अब व्यवस्था को रखकर न्यायसंगत होने की कोशिश नहीं करते (रोमियों 7:1–6)। यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा विश्वासियों के लिए व्यवस्था की बाँधने की सामर्थ को रोक दिया है। इस प्रकार बाईबल सिखाती है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था को रद्द कर दिया है, अर्थात, उसने विश्वासियों के लिए व्यवस्था को निरसित या निराकृत कर दिया है। व्यवस्था अब विश्वासियों पर दोष या निन्दित (बर्बाद) नहीं कर सकती। तथापि, अविश्वासी और गैर–मसीह अब भी व्यवस्था के निचे आते हैं और अंतिम न्याय के दिन व्यवस्था के द्वारा ही उनका न्याय होगा (रोमियों 2:12–16)।

4. यीशु मसीह के पहले आगमन पर व्यवस्था समाप्त कर दी गई।

पढ़ें इफिसियों 2:13–18 ।

(1) व्यवस्था ने यहूदी विश्वासियों को गैर यहूदी विश्वासियों से अलग कर दिया।

देश–निष्कासन की अवधि के बाद यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने जोर को नैतिक व्यवस्था से मोड़ के समारोहपूर्ण व्यवस्था की ओर कर दिया। व्यवस्था रखने की बाहरी दिखावट अंदरुनी और परमेश्वर की व्यवस्था की धर्मी आवश्यकताओं के प्रति वास्तविक आज्ञाकारिता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन गई (मत्ती 5:17–48)। यहाँ तक कि उन्होंने व्यवस्था के प्रति समारोहपूर्ण व्यवस्था में 613 परंपरागत नियमों और अपने स्वयं के नियमों को जोड़कर शून्य बना दिया (मत्ती 15:1–20)।

इस प्रकार यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने केवल यहूदी विश्वासियों के लिए मंदिर के आँगन के चारों ओर क्षेत्र को आरक्षित करने

के लिए एक शाब्दिक दीवार का निर्माण किया और मंदिर के आंगन में अन्यजाति विश्वासी के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए एक लिखित चिन्ह लगा दिया।

इफिसियों 2:15 में पौलुस समारोहपूर्ण व्यवस्था और इसके नियमों की तुलना इस शाब्दिक दीवार से करता है। देश–निष्कासन के बाद यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने समारोहपूर्ण व्यवस्था को एक आध्यात्मिक दीवार में बदल दिया जिसने यहाँ तक कि जातीय यहूदियों को उन अन्यजातियों से अलग रखा जिन्होंने यहूदी विश्वास स्वीकार कर लिया था। और मसीह की आने के बाद यहूदी मसीह कुछ समारोहपूर्ण कानून पकड़े रहना चाहते थे जैसे खतना, शुद्ध भोजन कहना, दशमांश लाना,सब्त को रखना और यहूदी पर्व और उपवास। इस रीती से यहूदी मसीहों ने अपने और गैर–यहूदी मसीहों के बिच एक आध्यात्मिक दीवार खड़ी कर दी, जो यह समारोहपूर्ण व्यवस्था को नहीं रखते थे। यह विभाजन एशिया माइनर में मसीहों के दो समूहों के बीच शत्रुता का कारण बना।

(2) यीशु मसीह ने समारोहपूर्ण व्यवस्था को समाप्त कर दिया, वह यह है कि, सब विश्वासियों के लिए उसके अस्तित्व का अंत कर दिया।

क्रूस पर मरने के द्वारा, यीशु मसीह ने यह यहूदी मसीहों और अन्यजाति मसीहों के बिच ष्विभाजन दिवारष् को नष्ट कर दिया। उसने समारोहपूर्ण व्यवस्था को समाप्त कर दिया, वह यह है कि, समारोहपूर्ण व्यवस्था के अस्तित्व का अंत कर दिया। उसने ऐसा यहूदी मसीहों

और अन्यजाति मसीहों में से एक मसीह समाज बनाने के लिए किया (इफिसियों 2:14–22; 10:16; इफिसियों 3:3–6)। यीशु मसीह ने न केवल इस धारणा को ही हटाया कि नैतिक व्यवस्था लोगों को सही ठहरा सकती है, परंतु समारोहपूर्ण व्यवस्था को परमेश्वर के समीप जाने और आराधना करने के साधन के रुप से भी हटाया है।

5. व्यवस्था स्थायी रूप से यीशु मसीह के पहलेआगमन पर बदल गई।

यीशु के पहले आगमन के साथ व्यवस्था का भी स्थायी बदलाव आ गया है (इब्रानियों 7:12)। नए नियम की शिक्षा साफ दिखती है कैसे समारोहपूर्ण व्यवस्था के अनेक भाग समाप्त कर दिए गए हैं: कैसे पुराने नियम की अवधि की परछाईयाँ नए नियम की अवधि की वास्तविकता में बदल गयीं (कुलुस्सियों 2:17)।

(1) छाया और वास्तविकता के रूप में याजक।

हारून के क्रम में पुराने नियम के याजक नए नियम के मलिकिसिदक के क्रम के याजकों के लिए विमर्श किया गए। इस्राएल में याजकों को समाप्त कर दिया और दुनिया के सभी विश्वासियों के लिए एक और केवल महायाजक द्वारा बदल दिया गया, यीशु मसीह (इब्रानियों 7:11–28)।

(2) छाया और वास्तविकता के रूप में मंदिर।

पुराने नियम का मिलाप का तम्बू और येरुशलेम में भौतिक मंदिर समाप्त कर दिए गए (मत्ती 27:51, प्रेरितों के काम 7:48–49, 17:24–25, प्रकाशितवाक्य 21:22) और नए नियम के आत्मिक मसीह समाज (कलीसिया) के साथ बदल दिए गए। नए नियम का मंदिर कोई धार्मिक इमारत शामिल नहीं करता है, परंतु परमेश्वर की आत्मा के द्वारा अंद्रुनीवास वाले लोगों का समूह (2 कुरिन्थियों 6:14; इफिसियों 2:19–22)।

(3) छाया और वास्तविकता के रूप में यहूदी पर्व।

पुराने नियम के यहूदी पर्व समाप्त कर दिए गए (रोमियों 14:5, कुलुस्सियों 2:16–17, गलातियों 4:8–11)। यीशु ने नए नियम में केवल दो मसीह समारोहों की शुरूआत कीरू प्रभु भोज (मत्ती 26:26–28य 1 कुरिन्थियों 11:23–26) और पानी के साथ बपतिस्मा (मत्ती 28:19)। अन्य सभी आधुनिक मसीही त्योहार जैसे क्रिसमस, गुड फ्राइडे, ईस्टर, उदगम और पेन्टीकोस्ट की तरह अन्य सभी बाद में परंपरा में पैदा हुए हैं। वे आवश्यक नहीं हैं, लेकिन मनाया जा सकते है।

(4) सब्त छाया और वास्तविकता के रूप में।

पुराने नियम के सब्त का समारोहपूर्ण पहलू, अर्थात्, सप्ताह के सातवें दिन इसे रखते हुए, समाप्त कर दिया और आराम और ताजा होने द्वारा बदल दिया गया था, अन्य विश्वासियों के साथ बैठना और अच्छा करना और लोगों के जीवन बचाने के द्वारा (मरकुस 2:23–28, 3:1–6) सप्ताह के किसी भी दिन (प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)। ष्एक आदमी एक दिन अन्य की तुलना में अधिक पवित्र मानता हैय एक और आदमी हर दिन एक जैसे मानता है (वे दोनों श्परमेश्वर के लिए ऐसा करते हैं)। हर एक अपने ही मन में निश्चय किया जाना चाहिए (रोमियों 14:5–6)।

(5) छाया और वास्तविकता के रूप में समारोहपूर्ण प्रार्थना।

पुराने नियम की समारोहपूर्ण प्रार्थना एक दिन में तीन बार यरूशलेम की ओर मुँह करके (भजन संहिता 55:17; दानिय्येल 6:10) नए करार में परमेश्वर के साथ अकेले में प्रार्थना द्वारा बदल दिया गया था और प्रार्थना करनी जैसे ष्हे हमारे पिताष् (मत्ती 6:5–15)।

(6) छाया और वास्तविकता के रूप में उपवास।

पुराने नियम के उपवास उनके शोक के साथ ही समाप्त कर दिए गए और नए नियम के मसीह की लगातार उपस्तिथि के आनन्द से बदल दिए गए (मत्ती 6:16–18, 9:14–17; मरकुस 2:18–22)। नबी जकर्याह ने भविष्यवाणी की थी कि ऐसा होगा (जकर्याह 8:19)।

(7) छाया और वास्तविकता के रूप में बलिदान।

पुराने नियम में सभी जानवरों के बलिदानों की भेंटों को समाप्त कर दिया गया क्योंकि नए नियम में उन्हें पूरा किया और एक बार सभी के लिए यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा बदल दिया गया था (यूहन्ना 1:29, इब्रानियों 07:27, 9:9–14,25–26; 10:10)। यूनानी शब्द ''एफापैक्स''का अर्थ है ''एक बार में'' या ''सब के लिए एक बार'' और घटना की निश्चितता और अन्तिम स्थिति को नियुक्त करना।

(8) छाया और वास्तविकता के रूप में दशमांश।

नए नियम के दशमांश देने बंद कर दिए गए एयर नए नियम के देने के तरीके में बदल दिए गए (मरकुस 12:41–44, लूका 6:38, 1 कुरिन्थियों 16:2, 2 कुरिन्थियों 8:3,12,14, 9:6–7)। देखें ''देना'' नियमावली 4, सबक 44 में ।

(9) छाया और वास्तविकता के रूप में खतना।

पुराने नियम के शारीरिक कहते को समाप्त करके नए नियम में दिल के आत्मिक खतने के द्वारा बदल दूय गया। (रोमियों 2:28–29, 1 कुरिन्थियों 7:17–20, गलतियों 6:15)।

(10) प्रक्षालन (शुद्धि संस्कार) छाया और वास्तविकता के रूप में।

पुराने नियम प्रक्षालन शुद्धि संस्कार या छिड़काव के माध्यम से धोना या ऊपर से व्यक्ति पर पानी डालना और उंडेलना थे। यह पाप और संसार की गन्दगी को धोने को संकेत करते थे लैव्यव्यवस्था 14:1–9; लैव्यव्यवस्था 4:1–5:13; 15:11; यहेजकेल 36:25–27; मरकुस 7:2–4; लूका 11:38–39; यूहन्ना 13:5,9–10; इब्रानियों 10:19–22)। वे आगे की ओर इशारा करते पुनर्जन्म के लिए छाया के रूप में सेवा करते थे (पापों का धोया जाना) और नए नियम में पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्धिकरण (प्रेरितों के काम 2:38; 10:44–48; तीतुस 3:5–6; ईब्रानियों 10:22), (प्रेरितों के काम 22:16) पानी के साथ बपतिस्मा में प्रतीक है।

(11) छाया और वास्तविकता के रूप में स्वच्छ खाद्य पदार्थ।

शुद्ध खाद्य पदार्थरथों के प्रति पुराने नियम के विनियमनों ने शुद्धिकरण की एक छाया के रूप में सेवा की (व्यवस्थाविवरण 14:1–3)। परमेश्वर के वचन के द्वारा जो विश्वासी को एक ही बार हमेशा के लिए शुद्ध करता है नए नियम में यह विनियम समाप्त किया गया (यूहन्ना 15:3; इफिसियों 5:26)। मसीह ने अपने पहले आगमन बाद सभी खाद्य श्शुद्धश घोषित कर दिए (मरकुस 07:19, रोमियों 14:2–6,13–23, कुलुस्सियों 2:16, 1 तीमुथियुस 4:3–5)।

निष्कर्ष।

यीशु मसीह ने एक–बार–सारे–समय के लिए पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था को परिपूर्ण (मत्ती 5:17),रद्द और समाप्त कर दिया। वे रद्द, निरस्त, निराकृत, मिटाये (कुलुस्सियों 2:14) और समाप्त (उनके अस्तित्व को समाप्त किया) (इफिसियों 2:15) किये गए हैं। ये समारोहपूर्ण व्यवस्था को फिर से दुनिया भर के व्यापक मसीही कलीसिया में कभी पुनः शुरू नहीं किया जा सकता है। या किसी भी व्यक्तिगत मसीह मण्डलियों में और इस तरह फिर से मसीहों के बीच विभाजन के कारण बन है।

इसलिए पुराने नियम की समारोहपूर्ण व्यवस्था के विनियम जैसे याजकों की नियुक्ति, वेदी और मंदिर का निर्माण, सब्त और अन्य यहूदी पर्व रखना और उपवासों की अवधि, जानवर बलिदान लाना,लड़कों का शारीरिक खतना करना, धार्मिक अनुष्ठानों से पहले प्रक्षालन, समारोहपूर्ण शुद्ध खाने का सेवन और किसी भी मसीही मंडली में फिर से पेश नहीं किया जा सकता है।

इसके अलावा दशमांश के पुराने नियम विनियमन (मलाकी 3:10) किसी भी मसीही मंडली में एक मसीही कर्तव्य या आवश्यकता के रूप में फिर से पेश नहीं किया जा सकता है! परमेश्वर की मसीहों से आवश्यकता नहीं है कि वे दशमांश या उनकी आय का कोई अन्य प्रतिशत दें।

लेकिन परमेश्वर सिखाता है कि मसीहों को स्वेच्छा से, विश्वास के साथ, उदारता से , स्वतंत्र रूप से और हंसमुख होकर देना चाहिए (2 कुरिन्थियों 9:6–7) ! और वह बलिदान के साथ देने की सिफारिश भी करता है (लूका 6:38; प्रेरितों के काम 20:33–35; 2 कुरिन्थियों 8:3,9)।